M.A.SEM-I
PAPER-CC-1

सुशील कुमार
हिन्दी विभाग

(1)

प्रश्न :- भाषा की परिभाषा देते हुए उसके विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर - भाषा का अर्थ है - बोलना या कहना। सामान्यत: अपने व्यापक रूप में भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मानव-समाज परस्पर विचार-विनिमय करता है। प्राचीन भाषाशास्त्रीय चिंतन में भाषा की कोई स्पष्ट परिभाषा उपलब्ध नहीं होती, जबकि उसमें भाषाज्ञान इतना व्यावहारिक था कि उसे परिभाषाबद्ध करने की आवश्यकता नही समझी गयी।

आधुनिक काल में विभिन्न भाषावैज्ञानिकों द्वारा भाषा की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी गयी हैं। इनमें हिन्दी में डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० मंगलदेव शास्त्री, पं० किशोरीदास बाजपेयी, डॉ० उदय नारायण तिवारी और ए० एच० गार्डीनर आदि द्वारा दी गयी परिभाषाएँ विशेष चर्चित हुई हैं। इनका उल्लेख आवश्यक प्रतीत होता है।

डॉ० बाबूराम सक्सेना - के अनुसार जिन ध्वनि-चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उसकी समष्टि को भाषा कहते हैं। किंतु, भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से यह परिभाषा बहुत उपयुक्त नहीं है, क्योंकि इसमें उच्चारण - अवयवों का उल्लेख नहीं है।

डॉ० मंगलदेव शास्त्री - ने भाषा की परिभाषा देते हुए कहा है कि "भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या

(2)

व्यापार को कहते है, जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये गये वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।" ध्यातव्य है कि इस लक्षण में उच्चारण की स्पष्टता पर तो बल दिया गया है, परन्तु अर्थयुक्तता एवं प्रतीकात्मकता का निर्देश नही दिया गया है। जो भाषा के लिए अत्यावश्यक है।

पं० किशोरी दास बाजपेयी — के अनुसार विभिन्न अंगों में संकेतित शब्द-समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं। कहना होगा कि भाषा की यह परिभाषा अभिव्यक्ति दोष का शिकार है।

डॉ० उदय नारायण तिवारी — ने भाषा के स्वरूप के संबंध में कहा है कि "भाषा मनुष्य के प्रतीकात्मक कार्यों का प्राथमिक एवं बहुविस्तृत रूप है। निश्चय ही यह परिभाषा बहुत स्पष्ट नहीं है जबकि स्पष्टता परिभाषा की अनिवार्य शर्त मानी जाती है।

ए० एच० गार्डिनर — ने प्रयुक्त होनेवाले ध्वनि-संकेतों को 'भाषा' कहा है। उनके शब्दों में "

The common definition of Speech is the use of Articulate sound - Symbol for the Expression of thought''

इस परिभाषा में सार्थक ध्वनियों के

③

उच्चारण पर ध्यान नहीं दिया गया है, जो भाषा के लिए आवश्यक है।

"मानव-उच्चारण-अवयवों द्वारा निःसृत स्पष्ट एवं सार्थक ध्वनियों की उस क्रमबद्ध समष्टि को भाषा कहते हैं, जो लोक प्रतीति के अनुसार विभिन्न प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त होती है।"

इस परिभाषा से भाषा-संबंधी ये बातें स्पष्ट होती हैं—

(1.) भाषा के अंतर्गत मनुष्य के उच्चारणांगो से उत्पन्न सार्थक ध्वनियाँ आती हैं।

(2.) सार्थक ध्वनियाँ एक क्रम में उत्पन्न होती हैं, अर्थात व व्यवस्थित रहती हैं।

(3.) भाषा लोक-प्रतीति के अनुकूल अर्थात समाज-सापेक्ष होती हैं।

(4.) भाषा प्रतीकात्मक होती है।

भाषा के अंग—

ध्वनियों की जो व्यवस्था भाषा कहलाती है, उसके मुख्यतः चार अंग हैं—

(1) ध्वनि (2.) रूप शब्द (3.) वाक्य (4.) अर्थ

(1.) ध्वनि— मूलतः भाषा ध्वनियों का ही व्यवस्थित रूप होती है। ध्वनि को भाषा की मूल अथवा लघुतम इकाई मान जाता है।

(2.) रूप शब्द — केवल ध्वनि में यह क्षमता नहीं होती, जिससे भाषा-प्रयोग का प्रयोजन सिद्ध हो जाए। जैसे क्, ग्, ल्, म् आदि ध्वनियों के उच्चारण मात्र से प्रयोजन पूरा नहीं होता। तात्पर्य यह है

(4)

कि ध्वनियों को एक निश्चित क्रम में संयोजित करने पर ही उनकी अर्थवत्ता होती है।
(3.) वाक्य — वाक्य में मुख्यतया शब्द व्यवस्था (शब्द प्रयोग) पर ही ध्यान दिया जाता है।
(4.) अर्थ — भाषा प्रयोग का मूल प्रयोजन अर्थ ग्रहण अथवा सम्प्रेषण ही होता है। इसी कारण अर्थ को वाणी का पुष्पफल भी कहा गया है। यह भाषा की सबसे बड़े इकाई है।